संत गाडगे मिशन

के तत्वावधान में

महामानव संत गाडगे जी महाराज का 125वां जन्म दिवस समारोह

संत गाडगे जी महाराज

अध्यक्षता : मान्य० सी०पी० सिंह (अध्यक्ष, संत गाडगे मिशन)

मुख्य अतिथि : मान्य० नरसिंह वैंठा, पूर्व मंत्री बिहार सरकार एवम् पूर्व सदस्य राष्ट्रीय आयोग, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति

विशिष्ठ अतिथि : मान्य० अनन्त राम जी
(गीताजंलि इन्क्लेव) सेवा निवृत वरिष्ठ सरकारी अधिकारी
रामजीलाल (नेता जी) कालका जी
तीरथ राज भास्कर (आयुक्त, बिक्रीकर विभाग, गाजियाबाद)
सोमप्रकाश करनालिया (जोनल अध्यक्ष, दिल्ली धोबी सभा)

स्थान : डा० अम्बेडकर भवन, (तृतीय तल) पंचकुइंया रोड, दिल्ली

दिनांक : 25 फरवरी 2001

समय : प्रात: 10-00 बजे

प्रिय बन्धुओं,

वैसे तो भारत भूमि संतों की भूमि रही है। परंतु जिनमें महामहिम संत गाडगे जी महाराज, संत कबीर, संत रविदास, संत वाल्मीकि एवम् महापुरुष महात्मा ज्योतिबा फुले, पेरियार रामास्वामी नायकर, साहूजी महाराज एवम् बाबा साहब डा॰ बी॰आर॰ अम्बेडकर मुख्य हैं। महापुरुषों के जन्म दिवस मनाने का उद्देश्य सिर्फ उनकी पूजा अर्चना करके आत्म संतुष्टि कर लेना मात्र नहीं होता, अपितु उनके व्यक्ति गत जीवन कार्यों तथा जीवन दर्शन को समझकर उनसे शिक्षा लेकर उनके बताये हुए मार्ग को अपना कर समाज एवं मानवता की सेवा करना है।

जीवन परिचय :

संत गाडगे जी महाराज का जन्म 23 फरवरी सन् 1876 दिन बुधवार, कृष्ण पक्ष माघ महीना महाशिव रात्रि गांव तहसील दरियापुर धोबी समाज के एक गरीब परिवार में हुआ था। उस समय हमारे देश में रुढ़िवाद, धर्मान्धता, पाखण्ड, ढोंग व अन्धविश्वास चरम सीमा पर थे। बच्चे के जन्म के अवसर पर पूरी बिरादरी को दावत दी गई तथा बच्चे का नाम डेबू जी रखा गया। डेबू जी के पिता झिंगरा जी को शराब पीने की आदत थी। इस कारण उनकी शारीरिक एवम् आर्थिक स्थिति खराब होती गई और डेबू जी मात्र 8 वर्ष के थे कि इनके पिता जी संसार से चल बसे। लेकिन मरते समय झिंगरा जी ने अपनी पत्नी सखू बाई से कहा कि मेरा जीवन समाप्त हो रहा है तुम मेरे बेटे डेबू को शराब और मासल जीवन से दूर रखना।

आर्थिक तंगी के कारण डेबू जी की मां अपने पुत्र डेबू को लेकर अपने पिता के यहां दापुरे चली गई। डेबू जी के नाना हंवीर राव एक सम्पन्न व्यक्ति थे जिनके पास सारी सुविधायें मौजूद थी। इनके पास कई एकड़ जमीन थी। डेबू जी के मामा चन्द्रभान अपने पिता के साथ जमीन की देखभाल किया करते थे। डेबू जी अभी छोटे होने के कारण पशु चराने पूर्णा नदी पर जाते तथा टीने के डिब्बे व पत्थर बजाकर भजन कीर्तन करते।

डेबू जी को पहलवानी करने का बड़ा शौक था अत: लोग उन्हें पहलवान जी के नाम से भी पुकारने लगे। सौलह वर्ष की आयु (1892) में डेबू जी की शादी धन्ना जी की बेटी कुन्ताबाई से हो गई अत: डेबू जी विवाह बंधन में बंध गये। गृहस्थ जीवन होने पर उनके ऊपर काफी भार आ गया और वह अपने मामा के साथ खेतों में काम करने लगे लेकिन पहलवानी कसरत और कीर्तन से उनको कोई अलग नहीं कर सका। वे ईश्वर को निराकार मानते थे।

दापुरे के पास सांगवी दुर्ग जे गांव में बनाजी प्रथम जी नाम का एक साहूकार रहता था उस साहूकार का डेबू जी के मामा चन्द्रभान से काफी प्यार था। चन्द्रभान सीधे-सादे व्यक्ति थे। चन्द्रभान ने साहूकार से 5 एकड़ ऊसर भूमि खरीदी लिखा पढ़ी के लिये बाद में बात हुई, केवल जवानी ही उस जमीन को

जोतने लगे। डेबू जी तथा चन्द्रभान ने उस ऊसर जमीन को अथक परिश्रम से उपजाऊ बना लिया। जब वह जमीन उपजाऊ हो गई तो साहूकार की नीयत बदल गई और उसने जमीन लिखने से मना कर दिया। दूसरे दिन साहूकार ने जमीन पर कब्जा करने का निश्चय किया और यह खबर आस-पास के क्षेत्र में आग की तरह फैल गई। इस प्रक्रिया को देखने के लिए सैकड़ों लोग इकट्ठे हो गये। साहूकार घोड़े पर सवार हो अपने लठेतों के साथ खेत पर आ धमका लेकिन डेबू जी जरा भी नहीं घबराये। साहूकार ने गुण्डों को आदेश दिया कि डेबू को खेत से निकालकर बाहर फेंक दो। डेबू जी के मन में विचार आया कि किराये के लोगों से लड़ने में मुझे क्या मिलेगा वे तो बेचारे गरीब, अज्ञान और दुखी लोग हैं। पैसे और पेट पूजा के लोभ में आज हमारा अहित करने को मजबूर हैं। यह विचार कर डेबू जी हाथ में लाठी लेकर बिजली की तरह साहूकार पर टूट पड़े। यह दृश्य देखकर साहूकार के सभी लठैत भाग खड़े हुए और जमीन पर डेबू जी का ही कब्जा रहा।

सामाजिक कार्य

गाडगे जी महाराज समाज की कुव्यवस्था एवम् कुरीतियों का हमेशा विरोध करते थे। उनका कहना था कि नदी में स्नान करके पाप नहीं धुलते बल्कि शुभ कर्म से प्राणी पापों से मुक्ति पाता है। डेबू जी गांव में जाकर दलितों के द्वार पर झाड़ू लगाते और कहते **''मैं दुबारा जब भी यहां आऊं तो मुझे ऐसा ही साफ सुथरा मिले।''**

सामाजिक क्रांति के अग्रदूत एवम् मानसिक गुलामी से संघर्ष करने वाले संत गाडगे जी महाराज ने शिक्षा को परमावश्यक बताया तथा स्वाभिमान का पाठ पढ़ाकर सामाजिक गुलामी को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने दलितों और पिछड़ों को शिक्षा के लिए सैकड़ों स्कूल बनवाये। वह कहते थे **''मंदिर की पूजा झूठी और धोखेबाज है असली पूजा गृह तो शिक्षा मंदिर हैं''** उनका कहना था कि अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दो। क्योंकि ''विद्या बड़ी चीज है, पैसे की तंगी हो तो खाने के बर्तन बेच दो और अपने लिये कम दाम का कपड़ा खरीदो, टूटे फटे मकान में रहो पर बच्चों को शिक्षा दिये बिना न रहो।'' उनके अनुसार शिक्षा का महत्व इस प्रकार है।

1. शिक्षा ज्ञान दृष्टि है।
2. शिक्षा विकास द्वार है।
3. शिक्षा जीवन को परमार्जित तथा परिस्कृति करती है।
4. शिक्षा विकास पथ की जननी है।
5. शिक्षा मनुष्य जाति की शक्ति है।
6. शिक्षा बिना व्यक्ति अछूत है दरिद्र है।
7. शिक्षा से ही व्यक्ति विद्वान एवं महान बनता है।

संत गाडगे महाराज ने 10 स्कूल, 5 कालेज, कई अस्पताल, 5 छात्रावास एवम् 25 धर्मशालाओं का निर्माण कराया।

भारत के संविधान निर्माता बाबासाहब डा॰ भीमराव अम्बेडकर जब विधि मंत्री थे तो गाडगे महाराज कुछ दिन बीमार हो गये। बाबा साहब अधिक व्यस्त होने के बावजूद गाडगे महाराज को देखने गये और लोगों से कहा, "**अरे महाराज के बारे में क्या सोचते हो? पत्थर की पूजा करने के बजाय, आपके समक्ष जो भगवान से भी महान है उनकी पूजा करो क्योंकि ये लोग ही समाज व्यवस्था को बदलते हैं।**"

अत: डा॰ भीमराव अम्बेडकर महाराज जी को अपने गुरु समान आदर देते थे। मानवता के पुजारी संत गाडगे महाराज के इस साथी ने दलित, शोषित, पीड़ित एवम् सर्वहारी लोगों से कहा था कि "**मात्र जीवित रहने की विशेष बात नहीं, मुख्य बात है जीवित रहने के स्तर की संघर्ष में पराजित होकर कैदी जैसा जीवन बिताना दूसरे प्रकार का जीवन स्तर है।**" मनोवैज्ञानिकों ने कहा है "**जैसी मनुष्य की सोच एवम् विचार होते हैं वैसा ही उनका जीवन स्तर बन जाता है।**" अत: इसे संत गाडगे महाराज के व्यक्तिगत जीवन, जीवन दर्शन तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों से शिक्षा लेकर समाज में समता स्वतंत्रता व बंधत्व का वातावरण बनायें।

अत: समाज के समस्त बुद्धिजीवि साथियों से अपील की जाती है कि महाराज जी के जन्म समारोह में तन-मन-धन से सहयोग करें तथा समय से पहुँचकर समारोह को सफल बनायें।

धन्यवाद।

निवेदक
सी॰पी॰ सिंह
अध्यक्ष
सम्पर्क सूत्र : 7472288

संयोजक
डा॰ आर॰सी॰ मथुरिया
सैकेट्री जनरल
सम्पर्क सूत्र : 5629359

संत गाडगे मिशन

महामानव, परमपूज्य संत गाडगे जी महाराज के जीवन दर्शन एवम् कार्यों से प्रेरणा पाकर एवम् संत जी के मिशन को जन-जन तक पहुँचाना अपना परम कर्तव्य मानकर हमारे साथियों ने "संत गाडगे मिशन" की स्थापना मान्य॰ सी॰पी॰ सिंह की अध्यक्षत में दिल्ली में शालीमार बाग की एक जनसभा में 3 सितम्बर 2000 को हुई, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. संत गाडगे जी महाराज के विचारों को जन-जन तक पहुँचाकर सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास करना एवम् सामाजिक एकता के लिये भाई चारे को बढ़ावा देना।
2. समाज में व्याप्त बुराईयों एवम् कुरीतियों के प्रभाव का अध्ययन करके उनके निराकरण का प्रयास करना।
3. पिछड़े क्षेत्रों में शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करके अशिक्षित लोगों के मध्य शिक्षा का विकास करना।
4. पुस्तकालयों एवम् छात्रावासों की स्थापना करना।
5. गरीब वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का उचित मार्ग दर्शन कराना एवम् आर्थिक सहायता प्रदान करना।
6. आर्थिक एवम् सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए भारत सरकार/राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं एवम् कार्यक्रमों से अवगत कराकर लाभान्वित कराना।
7. आर्थिक उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक केन्द्रों का संचालन करना।
8. सामाजिक एवम् आर्थिक उत्थान के लिए अन्य कार्यक्रमों का संचालन करना।

● ● ●

संत गाडगे जी महाराज का 125वां जयंती समारोह कार्यक्रम

सौजन्य : संत गाडगे मिशन दिल्ली

दिनांक : रविवार, 25 फरवरी 2001

स्थान : डा॰ भीमराव अम्बेडकर भवन (तृतीय तल) पंचकुइयां मार्ग दिल्ली

कार्यक्रम

प्रातः 10.30-10.40 मुख्य अतिथि द्वारा संत गाडगे जी महाराज की प्रतिमा पर दीप ज्योति एवम् माल्यार्पण

10.40-11.00 संत जी की आरती (कैसेट द्वारा) एवम् कीर्ति गान

11.00-11.20 मुख्य अतिथि एवम् विशिष्ट अतिथियों का स्वागत

11.20-12.00 स्वागत भाषण-डा॰ राम चरण मथुरिया सचिव संत गाडगे मिशन

12.00-13.15 विशिष्ट अतिथि एवम् वयक्तियों के भाषण

13.15-13.50 मुख्य अतिथि जी का भाषण

13.50-14.10 अध्यक्षीय भाषण-श्री चन्द्रपाल सिंह अध्यक्ष - संत गाडगे मिशन

14.10-14.20 धन्यवाद प्रस्ताव - डा॰ जी॰डी॰ दिवाकर
उपाध्यक्ष - संत गाडगे मिशन

14.20-15.30 भोजन

1. संत गाडगे जी महाराज के विचारों को जन-जन तक पहुँचाकर सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास करना एवम् सामाजिक एकता के लिये भाई चारे को बढ़ावा देना।
2. समाज में व्याप्त बुराईयों एवम् कुरीतियों के प्रभाव का अध्ययन करके उनके निराकरण का प्रयास करना।
3. पिछड़े क्षेत्रों में शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करके अशिक्षित लोगों के मध्य शिक्षा का विकास करना।
4. पुस्तकालयों एवम् छात्रावासों की स्थापना करना।
5. गरीब वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का उचित मार्ग दर्शन कराना एवम् आर्थिक सहायता प्रदान करना।
6. आर्थिक एवम् सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए भारत सरकार/राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं एवम् कार्यक्रमों से अवगत कराकर लाभान्वित कराना।
7. आर्थिक उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक केन्द्रों का संचालन करना।
8. सामाजिक एवम् आर्थिक उत्थान के लिए अन्य कार्यक्रमों का संचालन करना।

● ● ●

संत गाडगे जी महाराज का 125वां जयंती समारोह कार्यक्रम

सौजन्य : संत गाडगे मिशन दिल्ली

दिनांक : रविवार, 25 फरवरी 2001

स्थान : डा० भीमराव अम्बेडकर भवन (तृतीय तल) पंचकुइयां मार्ग दिल्ली

कार्यक्रम

प्रातः 10.30-10.40 मुख्य अतिथि द्वारा संत गाडगे जी महाराज की प्रतिमा पर दीप ज्योति एवम् माल्यार्पण

10.40-11.00 संत जी की आरती (कैसेट द्वारा) एवम् कीर्ति गान

11.00-11.20 मुख्य अतिथि एवम् विशिष्ट अतिथियों का स्वागत

11.20-12.00 स्वागत भाषण-डा० राम चरण मथुरिया सचिव संत गाडगे मिशन

12.00-13.15 विशिष्ट अतिथि एवम् वयक्तियों के भाषण

13.15-13.50 मुख्य अतिथि जी का भाषण

13.50-14.10 अध्यक्षीय भाषण-श्री चन्द्रपाल सिंह अध्यक्ष - संत गाडगे मिशन

14.10-14.20 धन्यवाद प्रस्ताव - डा० जी०डी० दिवाकर
उपाध्यक्ष - संत गाडगे मिशन

14.20-15.30 भोजन

मिशन की कार्यकारिणी

(क) पदाधिकारी गण

1. **श्री सी०पी० सिंह**, अध्यक्ष
2. **डा० जी०डी० दिवाकर**, उपाध्यक्ष
3. **श्री चिरंजीलाल**, उपाध्यक्ष
4. **डा० आर०सी० मथुरिया**, सेक्रेटरी जनरल
5. **प्रोफे० सी०एल० कनौजिया**–संयुक्त सचिव
6. **श्री राजेन्द्र सिंह**–संयुक्त सचिव
7. **श्री हेमनाथ दिवाकर**–सांस्कृतिक कार्यक्रम सचिव
8. **श्री बाबूराम चौधरी**–सांस्कृतिक कार्यक्रम सचिव
9. **श्री राजा राम कनौजिया**–प्रचार सचिव
10. **श्री रामपाल सिंह**–कोषाध्यक्ष
11. **एड० वी०पी० सिंह**–विधि सलाहकार

(ख) सदस्य गण

श्री मुन्नालाल, डा० गिरीश माथुर, श्री रामपाल सिंह, श्री महीपाल सिंह, श्री राम अनूजा, श्री चोखेलाल माथुर, श्री राम सागर चौधरी, श्रीमती माया देवी नरवरिया, श्रीमती सुमन भाष्कर, श्री राम गोपाल, श्री उदय भानु, श्री वेद प्रकाश, श्री राम किशोर, श्री रामपाल सिंह माथुर, श्री आर०बी० लाल, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री शिवशंकर चौधरी, श्री रामफल माथुर, श्री वेदराम, श्री मिश्रीलाल।

संत गाडगे जी महाराज के दस मानव सेवा मंत्र

- भूखे को भोजन दो।
- प्यासे को पानी दो।
- वस्त्रहीन हो वस्त्र दो।
- गरीब एवम् महिलाओ को शिक्षा दो।
- बेआसरों को आसरा दो।
- अंपगों एवम् रोगियों की चिकित्सा कराओ।
- पशु पक्षियों एवम् अन्य जानवरों को अभय दान दो।
- गरीब युवा एवम् युवतियों की लग्न कराओ।
- दुखी एवम् निराशावानों को साहस दो।
- बे-रोजगारों को रोजगार दो।

वैदिक मुद्रणालय, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-6 दूरभाष : 3537158, 3535895